कक्षा-06
हिन्दी

पाठ-07- साथी हाथ बढ़ाना

कविता- एक अकेला थक जाएगा - - - - - - - चट्टानों में पैदा कर दें राहें।

शब्दार्थ -

साथी - दोस्त, मित्र — बढ़ना - आगे, ऊपर
बोझा - भार — मेहनत - परिश्रम
परबत - पहाड़ — सीस - सिर
फौलादी - लोहे के समान मजबूत — राहें - रास्ते

अर्थ-

गीतकार ने हम लोगों को एक साथ मिलकर काम करने की शिक्षा दे रहे हैं। वे कहते हैं कि हम सभी को एक साथ मिलकर काम करना चाहिए, अगर हमारा एक साथी काम करते-करते थक जाता है तो हमें उसकी मदद करनी चाहिए ताकि वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की राह पर पीछे न छूट जाए। मिलकर काम करने वाले व्यक्ति के लिए कठिन से कठिन काम आसान हो जाता है। उनके पक्के इरादों के कारण विशाल सागर रास्ता देता है, पर्वत भी झुक जाता है।

अर्थात हमारी भुजाएँ फौलाद की तरह मजबूत हैं हमारी भुजाओं में काम करने की शक्ति है जिससे हम कठिन से कठिन काम को आसानी से कर सकते हैं।

कविता :- मेहनत अपने लेख - - - - - - - - अपना रस्ता नेक।

शब्दार्थ :-

लेख - भाग्य, किस्मत — रेखा - लकीर
गैर - पराया — खातिर - के लिए
मंजिल - लक्ष्य — नेक - अच्छा

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

अर्थ-
गीतकार हम सभी भारतवासी से कहते हैं कि हमें मेहनत, परिश्रम से घबराना नहीं है। मेहनत से हम अपने भाग्य की रेखा को बदल सकते हैं। पहले हमारे पूर्वजों ने मेहनत अंग्रेजों, राजाओं तथा जमींदारों के लिए किया है, और अब हमें अपने स्वतंत्र देश के लिए मेहनत करना है। हम सभी का सुख और दुख एक ही है। हमारा लक्ष्य सच्चाई और ईमानदारी का है, और रास्ता भी अच्छा है। अतः हमें एक-दूसरे की मदद करते हुए बढ़ना है।

कविता - एक से एक मिले तो .... बस में कर ले किस्मत।

शब्दार्थ-

कतरा - बूँद	दरिया - नदी
जर्रा - रेत का कण	सेहरा - रेगिस्तान
राई - सरसो का दाना	परबत - पहाड़
इंसाँ - आदमी	किस्मत - तकदीर

अर्थ -
गीतकार इन पंक्तियों के माध्यम से बताना चाहते हैं कि जिस प्रकार पानी की एक-एक बूँद मिलकर नदी का रूप लेती है, रेत का (बालू का) एक-एक महीन कण मिलकर बड़ा रेगिस्तान बन जाता है, तथा एक छोटी-छोटी राई के दाने मिलकर विशाल पर्वत बन जाता है। उसी प्रकार यदि इंसान मिलकर काम करें तो असंभव काम भी संभव हो जाता है। इस लिए हम मानव को मिल जुल कर एक दूसरे की मदद करते हुए आगे बढ़ते रहना चाहिए।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

गीत से -

प्रश्न (1) इस गीत की किन पंक्तियों को तुम अपने आसपास की ज़िंदगी में घटते हुए देख सकते हो?

उत्तर - साथी हाथ बढ़ाना
एक अकेला थक जाएगा, मिलकर बोझ उठाना।
साथी हाथ बढ़ाना।
हम मेहनत वालों ने जब भी, मिलकर कदम बढ़ाया
सागर ने रस्ता छोड़ा, परबत ने सीस झुकाया
एक से एक मिले तो कतरा, बन जाता है दरिया
एक से एक मिले तो ज़र्रा, बन जाता है सेहरा
एक से एक मिले तो राई, बन सकती है परबत
एक से एक मिले तो इंसाँ, बस में कर ले किस्मत
साथी हाथ बढ़ाना।

प्रश्न (2) 'सागर ने रस्ता छोड़ा, परबत ने सीस झुकाया' - साहिर ने ऐसा क्यों कहा?

उत्तर - गीतकार साहिर ने इस गीत में बताया है कि यदि हम मिलजुल काम करें तो कठिन-से कठिन काम को भी बड़ी आसानी से कर सकते हैं। तथा अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। क्योंकि संगठन में एकता में बहुत शक्ति होती है।

प्रश्न (3) - गीत में सीने और बाँहों को फौलादी क्यों कहा गया है?

उत्तर - गीतकार ने गीत में सीने और बाँहों को फौलादी इसलिए कहा है हम भारतवासी के इरादे पक्के और मजबूत हैं। लगातार मेहनत करते-करते हमारी भुजाएँ और सीने मजबूत हो गई हैं तथा आगे भी काम करने के लिए तैयार हैं।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

गीत से आगे -

प्रश्न (1) अपने आस पास तुम किसे 'साथी' मानते हो और क्यों? इससे मिलते जुलते कुछ शब्द खोज कर लिखो।

उत्तर - हमारे आसपास - माता-पिता, भाई-बहन, दोस्त, शिक्षक, सहपाठी, पड़ोसी - ये सभी हमारे साथी हैं। क्योंकि ये सभी हमारी मदद करते हैं।

मिलते-जुलते शब्द - सहायक, सखा, संगी, मित्र, सहचर आदि।

प्रश्न (2) 'अपना दुख भी एक है साथी, अपना सुख भी एक' कक्षा, मोहल्ले और गाँव/शहर के किस-किस तरह के साथियों के बीच तुम्हें इस वाक्य की सच्चाई महसूस होती है और कैसे?

उत्तर - 'अपना दुःख भी एक है साथी, अपना सुख भी एक।' कक्षा, मोहल्ले और गाँव के अपने हमउम्र के और समान आर्थिक, सामाजिक स्थिति वाले छात्रों के बीच इस सच्चाई को महसूस करते हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि इसी तरह का जीवन वे भी यापन करते हैं तथा एक दूसरों की मदद करते हैं।

प्रश्न (3) इस गीत को तुम किस माहौल में गुनगुना सकते हो?

उत्तर - गीतकार साहिर की यह गीत स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस जैसे राष्ट्रीय पर्व तथा बच्चों के अन्दर उत्साह एवं जोश पैदा करने के लिए गुनगुना सकते हैं, और विशेषकर जब सहयोग और संगठन की शक्ति पैदा करनी हो तो यह गीत कारगर होता है।

मुहावरे — (क) हाथ को हाथ न सूझना - (कुछ भी [illegible] देना)

(ख) हाथ साफ करना - (गायब करना)

(ग) हाथ पैर फूलना - (घबरा जाना)

(घ) हाथों हाथ लेना - (सम्मान देना)

(ङ) हाथ लगाना - (कुछ मिल जाना)

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

पाठ - 08 - ऐसे - ऐसे

शब्दार्थ:-

दफ्तर - कार्यालय
तकलीफ - कष्ट
बल्ला - बीमार का कष्ट
गुलजार - खुश
वात - हवा
तबीयत - स्वास्थ्य
हाल - स्थिति
अक्सर - हमेशा
चकित - परेशान
पेट में दाढ़ी होना - झूठा बहाना करना।
घर को सिर पर उठाना - शोर मचाना।
सफेद पड़ना - चेहरे का रंग उड़ना
बला - संकट
धमा-चौकड़ी - उछल कूद

कराहकर - दर्द भरी आवाज
तख्त - तख्ता
चंगा - स्वस्थ
रुआँसा - रोने जैसा
कब्ज - पेट साफ न होना
बदहजमी - भोजन का न पचना
लोचा-लोचा - कमजोर
बेशक - निःसंदेह
अट्टहास - जोर से हँसना
चैन न पड़ना - बेचैन रहना
गलीचा - कालीन
कल - चैन
पछाड़ - चित्त करना

प्रश्न - माँ, मोहन के 'ऐसे - ऐसे' कहने पर क्यों घबरा रही थी?
उत्तर - मोहन की माँ ने आजतक कभी भी 'ऐसे - ऐसे' रोग का नाम नहीं सुना था। बेटे की परेशानी तथा अजनबी रोग को देखकर उसे घबराहट हो रही थी। पुत्र-प्रेम में फंसकर उसे मोहन की चिंता सता रही थी। सबसे ज्यादा उसे इस नई बीमारी से चिंता हो रही थी।

प्रश्न - (2) ऐसे कौन - कौन से बहाने होते हैं जिन्हें मास्टर जी एक ही बार में सुनकर समझ जाते हैं? ऐसे कुछ बहानों के बारे में लिखो।
उत्तर - जब कोई विद्यार्थी विद्यालय का गृह-कार्य पूरा नहीं

P.T.O.

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

करते तो नाना प्रकार के बहाने बनाते हैं, जैसे- सिर दर्द, पेट दर्द, दाँत दर्द, बुखार, कॉपी का न होना, कॉपी घर पर छूटना, इत्यादि। इस प्रकार की बहुत सारे ऐसे बहाने होते हैं जिसे गुरु जी सुनते ही समझ जाते हैं, कि बच्चे ने अपना काम पूरा नहीं किया है।

मोहन ने भी अपना काम पूरा नहीं किया था, फलत: उसे भी इस बात का डर था कि कक्षा में शिक्षक मारेंगे। मार पड़ने से बचने के लिए मोहन ने 'ऐसे-ऐसे' नामक रोग का बहाना बनाया।

भाषा की बात -

बताना- रथ ने कपड़े अलमारी में रखे।
नहीं/मना करना- रथ ने कपड़े अलमारी में नहीं रखे।
पूछना- रथ! क्या तुमने कपड़े अलमारी में रखे?
आदेश देना- रथ! कपड़े अलमारी में रख दो।

— φ —

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

कक्षा - 06 PAGE - 01
हिन्दी

पाठ - 07 - टिकट - अलबम

शब्दार्थ -

अलबम - फोटो या टिकट संग्रह करने की फाइल
उत्सुक - बेचैन.
कवर - आवरण
धुन - लगन
तीखा - कड़वा
फिसड्डी - पीछे रहने वाला
बेशर्म - बिना शर्म के
टीप लिया - नकल कर लिखना
घुड़की देना - डराना, धमकाना
बघारना - बेकार की बातें करना
ट्रंक - संदूक
हेकड़ी - अकड़

जमघट - भीड़
अगुवा - आगे चलने वाला, नेता
शान - रौनक
ठहाका - जोर की हँसना
प्रकट - सामने, जाहिर
बेहद - बहुत अधिक
अनंत - जिसका अंत न हो
नकलची - नकल करने वाला
ईर्ष्यालु - जलन करने वाला
पानी भरना - फीका पड़ना
चिढ़ - नाराजगी

प्रश्न - ① नागराजन ने अपने अलबम के मुख्य पृष्ठ पर क्या लिखा और क्यों? उसका असर कक्षा के दूसरे लड़के - लड़कियों पर क्या हुआ?

उत्तर - नागराजन के मामा ने उसे जो अलबम भेजा था उस पर उसका नाम - ए. एस. नागराजन के अलावा यह भी लिखा था - "इस अलबम को चुराने वाला बेशर्म है। ऊपर लिखे नाम को कभी देखा है? यह अलबम मेरा है। जब तक घास हरी है और कमल लाल, सूरज जब तक पूर्व से उगे और पश्चिम में छिपे, उस अनंत काल तक के लिए यह अलबम मेरा है, रहेगा।"

ऐसा उसने इसलिए किया ताकि कोई दूसरा चुराने का प्रयास न करे। कक्षा के दूसरे विद्यार्थी पर इस तरह की बात का असर पड़ा और उसी तरह की बात वे भी

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

अपनी कॉपी तथा अलबम पर लिखने लगे।

प्रश्न (2) नागराजन के अलबम के हिट हो जाने के बाद राजप्पा के मन की क्या दशा हुई?

उत्तर - कक्षा के सभी बच्चे नागराजन के अलबम से प्रभावित हुए। तब राजप्पा को बहुत बुरा लगा। वह मन ही मन नागराजन से कुढ़ने लगा। उसे अब विद्यालय जाने की भी इच्छा नहीं हो रही थी। वह अब टिकट के संग्रह पर भी ध्यान नहीं देता। उसे अपना अलबम पसंद नहीं था। उसने मन में सोचा इतनी मेहनत कर टिकट संग्रह कर इस अलबम को बनाया आज वह कूड़ा के समान लगने लगा।

प्रश्न (3) अलबम चुराते समय राजप्पा किस मानसिक स्थिति से गुजर रहा था?

उत्तर - अलबम चुराते समय राजप्पा का दिल तेजी से धड़क रहा था, उसका शरीर मानो जलने लगा। गला सूख रहा था तथा चेहरा तमतमाने लगा। इसी मनोदशा में उसने अलबम को कमीज के नीचे छिपाकर वहाँ से चला गया।

प्रश्न (4) राजप्पा ने नागराजन का टिकट-अलबम अँगीठी में क्यों डाल दिया?

उत्तर - राजप्पा ने चोरी की थी, इसलिए उसके मन में तरह-तरह के बातें उठ रही थी, उसे डर था कि कहीं मेरी चोरी पकड़ी न जाए। उसे अप्पू ने बताया था कि नागराजन के पिता डी.एस.पी. ऑफिस में काम करते हैं। राजप्पा को डर हो गया कि अगर वे पुलिस लेकर

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

घर आ गये तो वह पकड़ा जाएगा। इसलिए वह उस अलबम को साक्ष्य मिटाने के लिए अँगीठी में जला दिया।

प्रश्न (5) लेखक ने राजप्पा के टिकट इकट्ठा करने की तुलना मधुमक्खी से क्यों की?

उत्तर - जिस तरह मधुमक्खियाँ मेहनत कर के छत्ता बनाती हैं, घूम-घूम कर फूलों मकरंद चूसकर छत्ते में जमा करती हैं और उसकी रक्षा बड़े ही जतन से करती हैं। ठीक उसी प्रकार राजप्पा ने भी बहुत ही परिश्रम कर के एक से एक दुर्लभ टिकट इकट्ठा किया था। इसी कारण लेखक ने राजप्पा की तुलना मधुमक्खियों से की है।

भाषा की बात

1. शब्दार्थ -

खाँसना - फँसाना	खलना - कमी का एहसास होना
अगुआ - आगे रहने वाला	कुढ़ना - ईर्ष्या होना
जमघट - भीड़	हेकड़ी - घमंड
पुचकारना - तसल्ली देना	ठहाका - जोर की हँसी
टटोलना - छूकर अंदाजा लगाना	तारीफ - प्रशंसा

ऊपर लिखे शब्दों से बच्चे स्वयं वाक्य बनायें।

2. उत्तर -

नकारात्मक विशेषण	उल्टा अर्थ
घमंडी	उदार
फिसड्डी	अगुआ
बेशर्म	शर्मीला
ईर्ष्यालु	स्नेही
चिंतित	निश्चिंत
कूड़ा	सुंदर
कीमती	सस्ता
फालतू	उपयोगी
मधानबैन	मन भावन
उतरा	चढ़ा, खिला

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

हिन्दी

पाठ - 10 - झाँसी की रानी

कविता - सिंहासन हिल उठे ------ झाँसी वाली रानी थी।

शब्दार्थ -

सिंहासन - राजा का आसन राजवंश - राजा का कुल या वंश
भृकुटी - भौंहें भृकुटी तानना - क्रोध करना
गुमी हुई - खोई हुई फ़िरंगी - अंग्रेज़
मर्दानी - मर्दों के समान योद्धा

अर्थ -

इन पंक्तियों के माध्यम से कवयित्री ने 1857 ई. के स्वाधीनता संग्राम में रानी लक्ष्मीबाई के योगदान की चर्चा करते हुए कहती हैं कि जब स्वतंत्रता के लिए युद्ध आरंभ हुआ तो सभी राजाओं के सिंहासन हिल गए उनमें हलचल मच गई सभी में बेड़ियों से जकड़े हुए बूढ़े भारत को आजादी दिलाने के लिए नया जोश उत्पन्न हो गया। सभी ने आजादी के महत्व को समझ लिया था। इसलिए उन्होंने अंग्रेजों को भारत से भगाने का निश्चय कर लिया। इस युद्ध में रानी लक्ष्मीबाई ने वीर पुरुषों की तरह लड़ी थी। उनकी यह कहानी हमने बुंदेलखंड के हरबोलों जाति के लोगों से सुनी थी।

कविता -

कानपुर के नाना ------ उसको याद जबानी थी।

शब्दार्थ -

मुँहबोली - वचन द्वारा स्थापित संबंध छबीली - सुन्दर
कृपाण - तलवार गाथाएँ - कहानियाँ

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

झाँसी की रानी

अर्थ-

रानी लक्ष्मीबाई कानपुर के नाना साहब की मुँहबोली बहन थी, उनके बचपन का नाम छबीली था। वह अपने पिता की अकेली ही संतान थी। बचपन से ही वह नाना के साथ रहती थी, उन्हीं के साथ पढ़ती और खेलती थी। लक्ष्मी बाई को बचपन से ही हथियार बहुत पसंद थे। इसलिए बरछी, तलवार, कृपाण आदि को वह अपनी सहेली मानती थी। बचपन में उन्होंने शिवाजी की वीरता की कहानी उन्होंने जो सुनी थी वे याद थी। हमने बुंदेलखंड के हरबोलों जाति के लोगों के मुँह से रानी लक्ष्मी बाई की वीरता की कहानी सुनी थी कि वह पुरुषों की तरह बहादुरी से लड़ी थी।

कविता -

लक्ष्मी थी या दुर्गा ...... थी आराध्य भवानी थी।

शब्दार्थ -

अवतार - किसी देवी-देवता का मनुष्य रूप में जन्म लेना।

वार - हमला

व्यूह - घेराबंदी

खूब - बहुत, अधिक

सैन्य - सेना

दुर्ग - किला

खिलवार - खेल

आराध्य - आराधना के योग्य

भवानी - पार्वती

पुलकित - प्रसन्न होना

अर्थ -

रानी लक्ष्मीबाई वीरता की अवतार थी लगता था कि वह लक्ष्मी या दुर्गा हो उनकी वीरता को देखकर मराठे

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

झाँसी की रानी

बहुत प्रसन्न होते थे। उनके प्रिय खेल थे नकली युद्ध करना, व्यूह की रचना कर दुश्मनों की घेराबंदी कर शत्रु के किले को तोड़ना और वीर राजाओं की तरह शिकार खेलना। लक्ष्मीबाई महाराष्ट्र की कुल देवी भवानी थी। हमने यह कहानी बुंदेल खंड के हरबोलो जाति के लोगों से सुनी कि ~~कह~~ लक्ष्मीबाई पुरुषों की तरह खूब लड़ी।

कविता -

हुई वीरता की वैभव - - - - शिव से मिली भवानी थी

शब्दार्थ -

वैभव - धन-संपत्ति   सगाई - मंगनी

सुभट - अच्छे वीर   विरुदावली - यश की कहानी

अर्थ -

वीरता की प्रतिमूर्ति लक्ष्मीबाई की धन-संपत्ति से भरी हुई झाँसी में सगाई हुई। विवाह के बाद राजा गंगाधर राव भी रानी बनकर झाँसी में आ गई। विवाह में बहुत ही बधाई बजी, खुशियाँ मनाई गई। ऐसा लग रहा था कि अर्जुन को चित्रा, शिव को पार्वती मिल गई हों हमने बुंदेलखंड के वीरों के मुँह से यह कहानी सुनी है लक्ष्मीबाई वीर योद्धाओं की तरह खूब वीरता से लड़ी थी।

कविता -

उदित हुआ सौभाग्य - - - - - शोकसमानी थी।

झाँसी की रानी

शब्दार्थ -

उदित हुआ – जागा | सौभाग्य – अच्छा भाग्य
मुदित – प्रसन्न | कालगति – मृत्यु की चाल
काली घटा घेरना – मुसीबत आना | कर – हाथ
कब भाई – कब अच्छी लगी | विधि – ईश्वर
निःसंतान – संतान के बिना | शोकसमानी – शोक में डूबना

अर्थ -

लक्ष्मीबाई के विवाह के बाद झाँसी का सौभाग्य जाग उठा था, महलों में चारों तरफ प्रसन्नता ही प्रसन्नता थी। लेकिन यह प्रसन्नता अधिक दिनों तक नहीं रह पाई। समय जैसे-जैसे गुजरने लगा, वैसे-वैसे दुर्भाग्य के बादल लक्ष्मीबाई पर घिर आए, और रानी विधवा हो गई। ईश्वर को भी उन पर दया नहीं आई। तीर चलाने वाले उन हाथों में चूड़ियाँ पहनना भगवान को शायद अच्छा न लगा राजा निःसंतान मर गये और रानी शोक में डूब गई। हमने रानी लक्ष्मी बाई की वीरता की यह कहानी बुंदेले हरबोलों के मुँह से सुनी है कि वह पुरुषों से भी ज्यादा बहादुरी से लड़ी।

कविता -

बुझा दीप झाँसी का - - - - - - - - - - झाँसी हुई विरानी थी।

शब्दार्थ -

दीप बुझना – मर जाना | हरषाया – प्रसन्न हो गया
हड़पना – अधिकार करना | अवसर – मौका
लावारिस – जिसका कोई उत्तराधिकारी न हो। | वारिस – उत्तराधिकारी
अश्रुपूर्ण – आँसू भरी हुई | विरानी – सुनसान

अर्थ -

जब राजा गंगाधर राव की मृत्यु हो गई तो झाँसी का दीपक

→

बुझ गया। वहाँ की प्रजा राजा विहीन हो गयी तब अंग्रेज शासक लॉर्ड डलहौजी बहुत प्रसन्न हुआ। उसने सोचा कि यही सही मौका है झाँसी को अपने अधिकार में लेने का उसने जरा भी देर न की और अपनी सेना भेज कर झाँसी पर अपना अधिकार जमा कर अपना झंडा फहरा दिया। रानी अपनी लाचार आँखों में आँसू भर कर झाँसी को उजड़ते हुए देख रही थी। हमने यह कहानी बुंदेले हरबोलों से सुनी है कि रानी पुरुषों की तरह वीरांगना थी।

कविता -
अनुनय - विनय नहीं सुनता है - - - - - दासी अब महरानी थी।

शब्दार्थ-

अनुनय-विनय – प्रार्थना, निवेदन
माया – प्रकृति
पसारना - विस्तार करना
पैरों ठुकराया - अवहेलना करना
विकट - कठिन
दया - कृपा
काया पलटना - बदलाव आना
दासी – नौकरानी

अर्थ:-
कवयित्री कहती है कि जब अंग्रेजों ने झाँसी पर अधिकार जमा लिया तब रानी लक्ष्मीबाई ने उनसे बहुत आग्रह किया लेकिन उनकी अनुनय-विनय का अंग्रेजों पर कोई प्रभाव न पड़ा। समय-समय की बात है. जब अंग्रेज भारत में व्यापार करने आए थे उस समय ~~यही~~ इन्हीं राजाओं से मदद मांगते थे। आज यही अंग्रेज उन सभी राजाओं के राज्यों पर अपना अधिकार जमा लिया है।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

झाँसी की रानी

कविता -

छिनी राजधानी देहली की - - - - - - - भी तो यही कहानी थी।

शब्दार्थ:-

बातों-बात - आसानी से
घात - प्रहार, आक्रमण
बंधु - बर्मा
पेशवा - सरदार
कौन विरासत - क्या औकात
वज्र निपात - करारी चोट

अर्थ -

अंग्रेजों का दमन चक्र जारी था, उसने एक-एक कर सभी राजाओं के राज्य पर अपना अधिकार जमा लिया। दिल्ली पर अपना अधिकार कर लिया, लखनऊ को आसानी से जीत लिया, बिठूर के पेशवा को बंदी बना लिया। उसी तरह नागपुर, उदयपुर, तंजौर, सतारा, कर्नाटक में इतनी शक्ति न थी कि वे अंग्रेजों का सामना कर सकें। वे भी अंग्रेजों के समक्ष हार मान गए। इतना ही नहीं सिंध, पंजाब, बर्मा बंगाल मद्रास सभी राज्यों ने भी हार मान ली। हमने बुंदेले हरबोलों के मुँह से सुना है कि लक्ष्मीबाई वीर पुरुषों की तरह बहादुरी से लड़ी थी।

कविता -

रानी रोईं रनिवासों में - - - - - - - देशी के हाथ बिकानी थी।

शब्दार्थ:-

रनिवास - रानियों के रहने का कमरा
सरे आम - सब के सामने
नौलख - बहुमूल्य
इज्जत - मान, सम्मान
बेजार - परेशान, पीड़ित
नीलाम - बोली लगाकर बेचना
बिकानी - बिक्री होना

P.T.O.

झाँसी की रानी

उ-ति:-

झाँसी के राजा के मृत्यु के बाद तथा अंग्रेजों का झाँसी पर अधिकार जमा लेने के बाद रानी लक्ष्मीबाई उदास होकर रनिवास में रहने लगी। दूसरे रानियों का भी वही हाल था। वहीं दूसरी तरफ अंग्रेजो ने उनके कीमती कपड़े तथा जेवर की नीलामी की सूचना अखबार में छपवा दिया। उनके गहने तथा कपड़े कलकत्ता के बाजारों में बिक रहे थे, नागपुर के जेवर लखनऊ के नौलखा हार, सबकी नीलामी होने लगी। यह कहानी हमने बुंदेलखंड के हरबोलों से सुनी थी कि झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई पुरुषों की तरह युद्ध में लड़ी थी।

कविता -

कुटियों में थी विषम वेदना - - - - - - - सोई ज्योति जगानी थी।

शब्दार्थ:-

कुटियों - झोपड़ियों
वेदना - तकलीफ
अपमान - बेइज्जती
अभिमान - बड़प्पन
स्फट - छिपाना
ज्योति - प्रकाश पुंज

विषम - कठिन
आहत - घायल
पुरखे - पूर्वज
रण-चंडी- दुर्गा का रक्त रूप
आह्वान - बुलाना

अर्थ!-

अंग्रेजो ने गरीब लोगों पर अत्याचार कर रहे थे। महलों की इज्जत धूल में मिल रही थी अंग्रेजी सेना के समक्ष हमारे वीर सैनिक भले ही कमजोर पड़ रहे थे लेकिन उनके अन्दर अपने पूर्वजों का गर्व कूट-कूट कर भरा हुआ था। एक ओर लक्ष्मीबाई के नाना धुंधूपत अंग्रेजों

Scanned with CamScanner

के विरुद्ध युद्ध की तैयारी में आवश्यक सामान जुटा रहे थे। वहीं रानी लक्ष्मीबाई ~~महल~~ महल तथा राज्य की औरतों में देवी दुर्गा के रण-चंडी रूप जगा रही थी. उन्हें युद्ध कौशल बना रही थी। रानी ने देवी-दुर्गा के आह्वान के लिए यज्ञ आरंभ किया, पर यज्ञ तो मात्र एक बहाना था। उन्हें तो खोई आजादी को दोबारा याद दिलाने दिलाने के लिए ज्योति जगानी थी। यह कहानी हमने बुंदेलखंड के हरबोलों से सुनी थी कि झाँसी की रानी अंग्रेजों के खिलाफ पुरुषों की तरह लड़ी थी।

कवित।-
महलों ने दी आग ---------- कुछ हलचल उकसानी थी।

शब्दार्थ -

ज्वाला - आग. | चिनगारी - आग का छोटा कण
अंतरतम - हृदय | चेती - जाग्रत हो गई
लपटें छाना - प्रचंड रूप से फैला | उकसाना - प्रेरित करना

अर्थ -
अंग्रेजों से अपनी आजादी छीन लिए जाने के बाद लोगों में उनके प्रति क्रोध उत्पन्न हो गया, अपनी आजादी पुनः प्राप्त करने के लिए सभी व्याकुल हो उठे। महल के लोगों ने इसकी ज्वाला भड़का दी इस ज्वाला की चिनगारी झोपड़ी तक पहुँच गई। झाँसी और दिल्ली सचेत हो गए। लखनऊ में यह जोश आग की लपटों की तरह फैल गई। मेरठ, पटना, कानपुर के लोगों में भी आजाद होने की इच्छा जाग गई। अब केवल जबलपुर और कोल्हापुर के लोगों को जगाना था। यह कहानी हमने हरबोलों की मुँह सुनी थी कि झाँसी वाली रानी अंग्रेजों से पुरुषों की तरह लड़ी थी।

Scanned with CamScanner

झाँसी की रानी

कविता :-

इस स्वतंत्रता-महायज्ञ में - - - - - - - - - उनकी जो कुरबानी थी।

शब्दार्थ :-

वीरवर – वीर व्यक्ति काम आना – कुर्बानी देना
सरनाम – मशहूर अभिराम – सुंदर, मनमोहक
जुर्म – अपराध कुरबानी – त्याग

अर्थ –

आजादी के इस महायज्ञ में अनेकों वीरों ने अपनी कुर्बानी दी। इन वीरों में नाना धुंधूपंत, ताँतिया, अजीमुल्ला-अहमदशाह मौलवी, ठाकुर कुंवर सिंह जैसे अनेक वीर थे। भारत की स्वतंत्रता के इतिहास रूपी आकाश में सूरज और चाँद की हमेशा इनका नाम अमर रहेगा। भारत की इस स्वतंत्रता की लड़ाई को अंग्रेजों ने अपराध कहा था। यह कहानी हमने हरबोलों के मुँह सुनी थी कि झाँसी की रानी ने अंग्रेजों से पुरुषों की तरह लोहा लिया था।

कविता –

इनकी गाथा छोड़ चले - - - - - - - - - - उसे अजब हैरानी थी।

शब्दार्थ :-

गाथा – कहानी द्वंद्व – दो वीरों में युद्ध, संघर्ष
असमान – जो बराबर न हो। जख्मी – घायल
अजब – अजीब हैरानी – आश्चर्य

अर्थ :-

कवयित्री कहती हैं भारत के उनराज्यों को छोड़ दिया जाए जो अंग्रेजों की दासता स्वीकार किया था। अब यहाँ केवल झाँसी की बात की जाए। झाँसी में अंग्रेजों की

झाँसी की रानी

वो लोहा लेने के लिए वीर पुरुष की तरह कमर कस कर खड़ी थी। उसी समय लेफ्टिनेंट वाकर अपने सैनिकों के साथ पहुँचा। रानी ने अपनी तलवार खींच कर युद्ध करने लगी। रानी लक्ष्मीबाई के सामने वह तनिक भी टिक न सका वह, घायल होकर भाग गया। रानी की वीरता की यह कहानी हमने बुंदेले हरबोलों से सुनी थी कि वीर पुरुषों की तरह लड़ी थी।

कविता:-

रानी बढ़ी कालपी . . . . जो छोड़ी राजधानी थी।

शब्दार्थ:-

निरंतर- लगातार — स्वर्ग सिधार - मर जाना

तत्काल - तुरंत — खाई हार - पराजित होना

अधिकार करना- कब्जे में करना

अर्थ-

रानी लक्ष्मीबाई लगातार चलते हुए सौ मील का रास्ता तय कर कालपी पहुँची, लेकिन वहाँ उनका घोड़ा थककर गिर पड़ा वहीं उसकी मृत्यु हो गई। यमुना नदी के तट पर एक बार पुन: अंग्रेजों को रानी के हाथों पराजय का मुँह देखना पड़ा। रानी विजय प्राप्त करते हुए ग्वालियर को भी जीत लिया। ग्वालियर का राजा सिंधिया अंग्रेजों का मित्र था वह रानी से डर कर भाग गया। रानी की वीरता की यह कहानी हमने हरबोलों से सुनी थी. कि वह वीरों की तरह लड़ी थीं।

झाँसी की रानी

कविता -
विजय मिली, - - - - - - - - - पर हाय! घिरी अब रानी थी।

शब्दार्थ :-

विजय - जीत
सम्मुख - सामने
मुँह की खाना - हारना
सखियाँ - सहेलियाँ
संग - साथ
मारीमार मचाना - तबाही मचाना

अर्थ :-
रानी विजयी हुई, लेकिन अंग्रेजों की सेना रानी को घेरती हुई आ गई। इस बार अंग्रेजी सेना की अगुवाई स्मिथ कर रहा था, इस स्मिथ को रानी ने एक बार पराजित कर चुकी थी। रानी की दो सहेलियाँ - काना और मंदरा भी उनके साथ थीं दोनों ने रणक्षेत्र में ~~बड़ी~~ बड़ी कुशलता से लड़ रही थी और मारकाट मचा रही थीं। इसी बीच ह्यूरोज वहाँ पहुँच गया, रानी बीच में घिर गई। हमने हरबोलों से सुना है कि युद्ध में रानी लक्ष्मी बाई पुरुषों के समान लड़ी थी।

कविता :-
तो भी रानी मार-काट - - - - - - - - वीर-गति पानी थी।

शब्दार्थ :-

मार-काटकर - लड़ते हुए
सैन्य - सेना
संकट - विपत्ति
विषम - डरावना
अपार - जिससे पार पाना कठिन हो,
बहुतेरे - बहुत सारे
सिंहनी - शेरनी
वीरगति पाना - युद्ध में शहीद होना

अर्थ :-
चूँकि रानी ह्यूरोज और स्मिथ की सेना से घिर चुकी थी फिर भी वह ~~सेना~~ अंग्रेजों की सेना को मारती काटती हुई

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

झाँसी की रानी

सेना नदी पार पहुँच गई, परन्तु सामने एक बड़ा नाला था, उस नाले को रानी का नया घोड़ा पार न कर सका वह वहीं रुक गया। इतने में ही अंग्रेजी सेना उनका पीछा करते वहाँ आ गए और उन्हें चारों तरफ से घेर लिया। रानी पर दोनों तरफ से वार होने लगे। शेरनी की तरह लड़ती हुई रानी घायल होकर गिर गई और वीरगति प्राप्त हुई। पुरुषों जैसी उस वीरांगना की कहानी हमने हरबोलों के मुँह से सुनी थी।

कविता:-

रानी गई सिधार - - - - - - - . जो सीख सिखानी थी।

शब्दार्थ:-

सिधार गई - मर गई
अधिकारी - हकदार
अवतारी - अवतार
सीख - शिक्षा, प्रेरणा
दिव्य - अलौकिक, देवताओं जैसी।
मनुज - मनुष्य
पथ - रास्ता।

अर्थ:-

रानी लक्ष्मीबाई वीरगति को प्राप्त हो गई। अंतिम संस्कार के लिए चिता पर रख दिया गया। उनका तेज आग के तेज में मिल गया। वे तेज की असली हकदार भी थी। अभी उनकी आयु मात्र तेइस साल की थी, तेइस साल में उन्होंने जो वीरता दिखाई थी, उससे ऐसा लगता था कि वह कोई मानव नहीं बल्कि कोई अवतार थी। वे स्वतंत्रता की देवी बनकर हमें जगाने आई थीं। हमें बलिदान की शिक्षा देने आई थी और दे कर चली गई। बुंदेले हरबोलों के मुँह से हमने यह कहानी सुनी है कि रानी पुरुषों जैसी बहादुरी से लड़ी।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

झाँसी की रानी

कविता :-

जाओ रानी याद रखेंगे .... तू खुद अमिट निशानी थी।

शब्दार्थ :-

याद - स्मरण
कृतज्ञ - उपकार को याद रखने वाला
बलिदान - त्याग
अविनाशी - कभी नष्ट न होने वाला
मदमाती - मस्त करने वाली
स्मारक - याद दिलाने वाला निर्माण
अमिट - न मिटने वाला।

अर्थ :-

अंत में ~~कवि~~ कवयित्री कहती है कि हे रानी! तुम स्वर्ग जाओ, लेकिन हम सब भारतवासी तुम्हारा यह बलिदान सदैव याद रखेंगे। तुम्हारा यह बलिदान हमें कभी न नष्ट होने वाली आजादी के प्रति सावधान करता रहेगा। इतिहास चाहे कुछ न कहे और सच्चाई का गला घोंट दिया जाए। अंग्रेजों द्वारा झाँसी का नामो निशान मिटा दिया जाए पर भारतवासी ~~के~~ यह बलिदान नहीं भूल सकेंगे। तू अपना स्मारक खुद होगी। तुम स्वयं कभी न मिटने वाली निशानी हो। यह कहानी हमने बुंदेलखंड के हरबोलों के मुँह से सुनी थी कि झाँसी की रानी युद्ध में पुरुषों की तरह वीरता से लड़ी थी।

प्रश्न - उत्तर

1. (क) उत्तर - इस पंक्ति में झाँसी के राजा गंगाधर राव के मरने तथा रानी के विधवा होने झाँसी की सारी खुशियों के शोक में बदलने की तरफ संकेत किया है।

(ख) जिस प्रकार काली घटाएँ घिर कर सूर्य को ढक लेती हैं और उनका प्रकाश कम कर देती हैं, उसी प्रकार राजा की मौत से झाँसी की खुशियाँ समाप्त हो गई और दुःख के काले बादल उमड़ने लगे।

Scanned with CamScanner

झाँसी की रानी

प्रश्न ② – कविता की दूसरी पंक्ति में भारत को 'बूढ़ा' कहकर उनमें 'नयी जवानी' आने की बात कह कर सुभद्रा कुमारी चौहान क्या बताना चाहती है?

उत्तर – 'बूढ़ा' तथा 'नयी जवानी' के प्रयोग कर कवयित्री यह कहना चाहती है कि वर्षों की गुलामी ने भारतवर्ष को बूढ़े व्यक्ति की तरह कमजोर और तेजहीन बना दिया था। लेकिन सन् सत्तावन की क्रांति ने भारतवर्ष में एक नयी जवानी तथा नया जोश ले कर आई। भारत-वासियों में स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए नई उमंग दिखने लगी थी।

प्रश्न-③ झाँसी की रानी के जीवन की कहानी अपने शब्दों में लिखो और यह भी कि उनका बचपन तुम्हारे बचपन से कैसे अलग था?

उत्तर:- रानी लक्ष्मीबाई अपने पिता की इकलौती संतान थी। नाना धुंधूपंत पेशवा उनके मुँह बोले भाई थे। बचपन में ये दोनों साथ साथ पढ़े। रानी का बचपन का नाम छबीली था। इन्हें हथियार बहुत अच्छे लगते थे, तलवार-बरछी, कटार चलाने में ये कुशल थी। बड़ी होने पर इनका विवाह झाँसी के राजा गंगाधर राव से हुआ। लेकिन ये अधिक दिनों तक सुहागन न रह सकीं। ये विधवा हो गईं। राजा गंगाधर राव के देहान्त के बाद अंग्रेजों ने झाँसी को हड़पने की योजना बनाई। और झाँसी पर आक्रमण कर दिया। रानी को हार का सामना करना पड़ा। लेकिन उन्होंने ने फिर से सेना का गठन किया और अंग्रेजों से युद्ध किया, इस युद्ध में इन्होंने पूरी शक्ति लगा दी

झाँसी की रानी

अंग्रेजों के छक्के छूट गये। नये घोड़ा के चलते ये एक नाले के पास फँस गई। अंग्रेज पीछा करते हुए आए और रानी को चारों ओर से घेर लिया और उनपर वार-पर वार करने लगे। अंत में रानी धरती पर घायल होकर गिर पड़ी और वीरगति को प्राप्त हुई।

रानी का बचपन हमारे बचपन से अलग है। रानी बचपन में हथियार को अपनी सहेली बनायी। हथियार चलाने तथा उसके वार से बचाना सीखा। वे नकली युद्ध, दुश्मन को घेरने, किला तोड़ने आदि खेल, खेला करती थी। नारी होते हुए भी उनमें साहस, वीरता कूट-कूट कर भरी हुई थी। ये सारे गुण हम जैसे साधारण बच्चों में नहीं है।

प्रश्न-(4)- वीर महिला की इस कहानी में कौन-कौन से पुरुषों के नाम आए हैं? इतिहास की कुछ अन्य वीर स्त्रियों की कहानियाँ खोजो।

उत्तर:- वीर महिला की इस कहानी में कई पुरुषों के नाम आए हैं जैसे- वीर शिवाजी, अर्जुन, नाना धुंधूपत- पेशवा, डलहौजी, वॉकर, स्मिथ, ह्यूरोज, तॉतिया, चतुर अजीमुल्ला- अहमदशाह मौलवी, ठाकुर सिंह

अन्य वीर स्त्रियाँ जिन्होंने इतिहास में अपना नाम दर्ज किया वो है- रजिया सुल्तान हाड़ा रानी, रानी पद्मिनी आदि

कक्षा - 06 PAGE-01

हिन्दी

पाठ - 11 - जो देखकर भी नहीं देखते।

शब्दार्थ :-

परखने - जानकारी प्राप्त करना	सैर - घूमना
खास - विशेष	आचरज - आश्चर्य
आदी - अभ्यस्त	रोचक - अच्छा लगने वाला
स्पर्श - छूकर	मखमली - कोमल
अपार - असीमित	खुशनसीब - किस्मतवाला
कालीन - फर्श पर बिछाने वाली दरी।	समाँ - माहौल
मचल उठना - लालायित होना	मुग्ध - मोहित
संवेदना - सुख-दुख महसूस करने की शक्ति	
कद्र - इज्जत	आस - आशा
दृष्टि - देखने की क्षमता	नियामत - ईश्वर के उपहार
इंद्रधनुषी - इंद्रधनुष के समान सात रंगों वाले।	

निबंध से :-

प्रश्न (1) "जिन लोगों के पास आँखें हैं, वे सचमुच कम देखते हैं" - हेलेन केलर को ऐसा क्यों लगता था?

उत्तर - जिन लोगों के पास आँखें हैं, वे सचमुच बहुत कम देखते हैं। लेखिका हेलेन केलर को ऐसा इसलिए लगता था, क्योंकि अक्सर लोग अपनी आँखों से सारी चीजों को देखने के बाद भी कहते हैं कि कुछ खास नहीं देखा। चूँकि लेखिका दृष्टिहीन थी, फिर भी वे प्रकृति की सारी सुंदरता को स्पर्श मात्र से ही उसकी खूबसूरती को भाँप जाती थी। लेकिन दृष्टि-वाले व्यक्ति देखकर भी उन सुंदरता को अनुभव नहीं कर पाते। इसलिए लेखिका ने कहा है कि जिन लोगों के पास आँखें हैं, वे सचमुच कम देखते हैं।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

प्रश्न - (2) 'प्रकृति का जादू' किसे कहा गया है?

उत्तर - ऋतुओं का परिवर्तन, वसंत में फूलों का खिलना, कलियों की पंखुड़ियों की मखमली सतह और घुमावदार बनावट, बागों में पेड़ों पर कलरव करते पक्षी, कलकल करते बहते हुए झरने, कालीन की तरह फैले हुए घास के मैदान आदि को प्रकृति का जादू कहा गया है।

प्रश्न - (3) - 'कुछ खास नहीं' - हेलेन की मित्र ने यह जवाब किस मौके पर दिया और यह सुनकर हेलेन को आश्चर्य क्यों नहीं हुआ?

उत्तर :- 'कुछ खास नहीं' - यह जवाब हेलेन की मित्र ने तब दिया जब वह जंगल की सैर कर वापस लौटी थी। हेलेन उसकी बातें सुन कर आश्चर्य इस लिए नहीं हुई क्योंकि वे ऐसे उत्तर सुनने की वे आदी हो चुकी थी। उन्हें विश्वास हो गया था कि जिन लोगों के पास आँखें होती हैं, वे बहुत कम देखते हैं।

प्रश्न - (4) - हेलेन केलर प्रकृति की किन चीजों को छूकर और सुनकर पहचान लेती थीं? पाठ पढ़कर इसका उत्तर लिखो।

उत्तर - हेलेन केलर भोज-पत्र पेड़ की चिकनी छाल, चीड़ की खुरदरी छाल, कलियों एवं फूलों की पंखुड़ियों की बनावट को छूकर तथा चिड़ियों के गीतों को सुनकर पहचान कर लेती थीं।

P.T.O →

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

प्रश्न 5 'जबकि इस नियामत से जिंदगी को खुशियों के इन्द्रधनुषी रंगों से हरा-भरा किया जा सकता है।' तुम्हारी नजर में इसका क्या अर्थ हो सकता है?

उत्तर:- आँखें अनमोल होती हैं। दुनिया की सारी खूबसूरती आँखों से ही है। आँखें न हों तो जीवन अंधकार हो जाता है। आँखों के द्वारा जीवन में सुन्दर रंग भर सकते हैं। आँखें ईश्वर का आशीर्वाद है।

भाषा की बात-

(1) चिकना - चिकना घड़ा और फर्श — मुलायम - बिस्तर और कपड़ा

सख्त - दीवार और लोहा — चिपचिपा - तेल और पिघला गुड़

खुरदुरा - फर्श और पेड़ की छाल — भुरभुरा - रेत और मिट्टी का ढेर

(2) उत्तर:-

भाववाचक संज्ञा	मूलशब्द	
मिठास	मीठा	विशेषण
सुख	सुखी	”
शांति	शांत	”
भोलापन	भोला	”
बुढ़ापा	बूढ़ा	”
घबराहट	घबराना	क्रिया
बहाव	बहना	क्रिया
फुर्ती	फुर्तीला	विशेषण
ताजगी	ताजा	”
क्रोध	क्रोधी	”
मजदूरी	मजदूर	संज्ञा
अहसास	अहसास	विशेषण

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

हिन्दी

पाठ - 12 - संसार पुस्तक है

शब्दार्थ:

अकसर - प्राय:	कोशिश - प्रयास
इरादा - विचार	हाल - दशा
शौक - लालसा	खतों - पत्रों (पत्र)
आबाद - बसा हुआ	जानदार - सजीव
जमाने - समय	मुश्किल - कठिन
गौर से - ध्यान से	मजे - लुत्फ, सुख
गढ़ लेना - बना लेना	आशा - उम्मीद
जबान - भाषा	खुरदरे - जो चिकना न हो
दामन - आँचल, पहाड़ के नीचे का जमीन	
दरिया - नदी	पेंदे - तली
जर्रा - कण	घरौंदे - छोटे-छोटे घर

पाठ से :-

प्रश्न - (1) लेखक ने 'प्रकृति के अक्षर' किसे कहा है?

उत्तर → लेखक ने छोटे-छोटे पत्थर के टुकड़ों, पहाड़, समुद्र, नदियों, पेड़-पौधों और प्रकृति से प्राप्त होने वाली छोटी-छोटी वस्तुओं को प्रकृति के अक्षर कहा है।

प्रश्न - (2) लाखों करोड़ों वर्ष पहले हमारी धरती कैसी थी?

उत्तर - लाखों करोड़ों वर्ष पहले हमारी धरती बहुत गर्म थी। उस समय किसी भी जीव का नामोनिशान नहीं था, क्योंकि अत्यधिक गर्मी के कारण किसी भी प्राणी का जीवित रहना असंभव था।

प्रश्न (3) दुनिया का पुराना हाल किन चीजों से जाना जाता है? कुछ चीजों के नाम लिखो।

उत्तर - दुनिया का पुराना हाल पहाड़, समुद्र, सितारे,

P.T.O.

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

नदियों, जंगल, जानवरों की पुरानी हड्डियों आदि से जाना जा सकता है।

प्रश्न (4)- गोल, चमकीला रोड़ा अपनी क्या कहानी बताता है?

उत्तर- गोल, चमकीला रोड़ा बताता है कि कुछ समय पहले वह चट्टान से टूटा हुआ एक खुरदरा और नुकीला टुकड़ा था। बारिश के पानी में बह कर वह छोटी घाटी तक पहुँचा। पहाड़ी नाले ने उसे ढकेलकर छोटे से दरिया में पहुँचा दिया। वहाँ से बहते-बहते दरिया में पहुँचा। इस तरह वह लुढ़कता और घिसता हुआ वह गोल और चमकदार बन गया।

प्रश्न (5)- गोल, चमकीले रोड़े को यदि दरिया और आगे ले जाता तो क्या होता? विस्तार से लिखो।

उत्तर- गोल, चमकीले रोड़े को अगर दरिया और आगे ले जाता तो वह छोटा होते-होते बालू का एक कण बन जाता और अन्य दूसरे कणों से मिलकर समुद्र के किनारे जमा हो जाता, जिस पर बच्चे खेलते और घरौंदा बनाते।

प्रश्न (6) नेहरू जी ने इस बात का हलका-सा संकेत दिया है कि दुनिया कैसे शुरू हुई होगी। उन्होंने क्या बताया है? पाठ के आधार पर लिखो।

उत्तर- नेहरू जी ने बताया है कि लाखों करोड़ों वर्ष →

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

• पहले जब उस धरती का जन्म हुआ, तब यह इतनी गर्म थी कि उस पर कोई भी जीव नहीं रह सकती थी। धीरे-धीरे इस पर पेड़-पौधे और जानवरों का अस्तित्व शुरू हुआ और उसके कई सालों बाद आदमी की उत्पत्ति हुई।

भाषा की बात:-

1. लुढ़कना – कलम टेबल से नीचे लुढ़क गई।
• ढकेलना - रोहन ने रवि को छत से ढकेल दिया
गिरना – बच्चा पलंग से नीचे गिर गया।
खिसकना - मेरे मित्र ने खिसककर मुझे बैठने की जगह दी।

2.

शब्द	प्रत्यय	विशेषण
पत्थर	ईला	पथरीला
रस	ईला	रसीला
काँटा	ईला	कँटीला
जहर	ईला	जहरीला

3. (क) परंतु (ख) कि
(ग) तो या (घ) ताकि
(ङ) यदि तो (च) इसलिए
(छ) नहीं

वाक्य - क्रमबद्ध सार्थक शब्द समूह जिससे कोई भाव या विचार स्पष्ट रूप से प्रकट हो, उसे वाक्य कहते हैं।
जैसे - मोहन गेंद खेल रहा है। क्रमबद्ध समूह
मोहन है खेल रहा गेंद। गलत शब्द समूह

वाक्य के मुख्य रूप से दो अंग होते हैं:-
(I) उद्देश्य - वाक्य में जिसके विषय में कुछ कहा जाए उसे उद्देश्य कहते हैं।
जैसे - मोहन गाना गाता है।
इस वाक्य में मोहन के बारे में कहा गया है, अतः मोहन उद्देश्य है।

(II) विधेय:- उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाए उसे विधेय कहते हैं।
जैसे - मोहन गाना गाता है।
इस वाक्य में मोहन - उद्देश्य है तथा गाना गाता है - विधेय है।

रचना के आधार पर वाक्य तीन प्रकार के हैं:-

(1) सरल या साधारण वाक्य:- जिस वाक्य में एक कर्ता और क्रिया हो उसे सरल वाक्य कहते हैं।
या
जिस वाक्य में एक उद्देश्य और विधेय हो उसे सरल वाक्य कहते हैं।
जैसे - बिजली चमकती है।
बादल गरजता है। भारत त्योहारों का देश है।

P.T.O.

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

(ii) संयुक्त वाक्य :- जिस वाक्य में दो या दो से अधिक सरल या मिश्र वाक्य किसी अव्यय द्वारा जुड़े हो उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं।

जैसे - वह धनी है, लेकिन बहुत घमंडी है। लेकिन - अव्यय

हम गए और तुम आए। और - अव्यय

(iii) मिश्र वाक्य :- जिस वाक्य में एक सरल वाक्य के अलावा एक या एक से अधिक आश्रित उपवाक्य हों, उसे मिश्र वाक्य कहते हैं।

जैसे - मैंने सुना है कि वह मुंबई पहुँच गया है।

यहाँ "मैंने सुना है" प्रधान वाक्य तथा "वह मुंबई पहुँच गया है" आश्रित उपवाक्य है। अतः ये मिश्र वाक्य है।

अर्थ के आधार पर वाक्य आठ प्रकार के हैं :-

① विधिवाचक - इससे किसी कार्य के होने का बोध होता है। जैसे - राम ने खा लिया

पिता जी आज पटना चले गए।

② निषेधवाचक - जिस वाक्य में किसी कार्य के न होने का बोध हो, उसे निषेधवाचक वाक्य कहते हैं।

जैसे - अभिषेक पढ़ता नहीं है।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

(3) आज्ञावाचक वाक्य :- जब किसी वाक्य से किसी तरह की आज्ञा, प्रार्थना, उपदेश आदि का बोध होता है तो उसे आज्ञावाचक वाक्य कहते हैं।

जैसे - i) बाहर जा कर देखो, कौन आया है।

ii) कभी झूठ मत बोलो।

iii) कृपया मेरी बात सुन लीजिए।

(4) प्रश्नवाचक वाक्य - जिस वाक्य से किसी प्रश्न का बोध होता है, उसे प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं।

जैसे - तुम पटना कब जा रहे हो?

तुम कब वापस आओगे?

(5) इच्छा बोधक वाक्य - जिस वाक्य से किसी प्रकार की इच्छा और शुभकामना प्रकट होती है, उसे इच्छा-बोधक वाक्य कहते हैं।

जैसे - ईश्वर तुम्हें सुखी रखे।

तुम्हें सफलता मिले

(6) संदेहवाचक वाक्य :- जिस वाक्य से किसी प्रकार के संदेह का भाव प्रकट हो, उसे संदेहवाचक वाक्य कहते हैं।

जैसे - शायद तुम पटना जाओगे।

शायद आज मंत्रीजी आएँ।

(7) संकेतवाचक वाक्य :- जिस वाक्य से किसी संकेत या शर्त का बोध हो उसे संकेत वाचक वाक्य कहते हैं। या जिन वाक्यों में एक क्रिया -

P.T.O.

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

का होना, दूसरी क्रिया पर निर्भर हो, उन्हें संकेतवाचक वाक्य कहते हैं।

जैसे- पिता जी आते तो अच्छा होता।
यदि वह परिश्रम करता, तो अवश्य सफल होता।

(8) विस्मयादिबोधक वाक्य – जिस वाक्य से सुख, दुःख, आश्चर्य, घृणा, क्रोध आदि का बोध हो उसे विस्मयादिबोधक वाक्य कहते हैं।

जैसे – वाह! हम जीत गए।
शाबाश! तुमने कमाल कर दिया।

—x—

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

व्याकरण

कारक

कारक :- संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप जो वाक्य से अन्य शब्दों, खास कर क्रिया से अपना संबंध प्रकट करता है, कारक कहलाता है।

जैसे - राम ने रावण को मारा।

नोट - इस वाक्य में दो संज्ञा-शब्द (राम, रावण) हैं तथा एक क्रिया-शब्द (मारा) है।

यहाँ दोनों संज्ञा-शब्दों का आपस में संबंध तो है ही, मुख्य रूप से उसका संबंध क्रिया (मारा) से है।

जैसे - रावण को किसने मारा? - राम ने

राम ने किसको मारा? - रावण को

यहाँ, मारने की क्रिया राम करता है, अतः राम ने = कर्ता कारक और मारने (क्रिया) का फल रावण पर पड़ता है, अतः रावण को - कर्म कारक है।

हिन्दी में कारक के आठ भेद हैं जो निम्नलिखित है:-

विभक्ति	कारक	कारक चिन्ह
प्रथमा	कर्ता	ने, 0
द्वितीया	कर्म	को, 0
तृतीया	करण	से, द्वारा
चतुर्थी	संप्रदान	को, के लिए
पंचमी	अपादान	से
षष्ठी	संबंध	का, के, की
सप्तमी	अधिकरण	में, पर
अष्टमी (प्रथमा)	संबोधन	हे, अरे इत्यादि

P.T.O.

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

नोट:- कारकों के साथ क्रमशः आनेवाले शब्द-प्रथमा, द्वितीया आदि ही विभक्ति हैं। लेकिन सामान्य भाषा में "कारक चिन्हों" को विभक्ति के रूप में प्रयुक्त किया जाता है।

कारक के आठ भेद होते हैं:→

① कर्त्ता कारक:- जो शब्द वाक्य में काम करने का बोध करता है उसे कर्त्ता कारक कहते हैं।

जैसे - (i) मोहन खाता है। (0 - विभक्ति)

(ii) सोहन ने खाया है। ("ने" - विभक्ति)

यहाँ पहले वाक्य में खाने का काम (क्रिया) मोहन करता है। यहाँ विभक्ति चिन्ह छिपा हुआ है।

दूसरे वाक्य में विभक्ति चिन्ह स्पष्ट है - "ने"

अतः विभक्ति चिन्ह - "ने" है।

② कर्म कारक:- जिस वस्तु पर क्रिया का फल (प्रभाव) पड़े उसे कर्म कारक कहते हैं।

जैसे - सोहन आम खाता है। - विभक्ति लुप्त है।

सोहन, मोहन को पीटता है - विभक्ति - "को" है।

③ करण कारक:- जिसकी सहायता से कोई काम किया जाये उसे करण कारक कहते हैं। इसके विभक्ति चिन्ह "से" और "द्वारा" है।

जैसे:- श्याम ने हाथ से रोटी खाई। - हाथ - साधन

उसने उसे डंडे के द्वारा पीटा। - डंडे - साधन

④ संप्रदान कारक:- जिसके लिए कोई क्रिया (काम) की जाए उसे संप्रदान कारक कहते हैं।

चिन्ह - "को" "के लिए"

जैसे - सोहन ने उसके लिए एक कलम खरीदी है।

श्याम ने गरीबों को धन दिया।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

(5) अपादान कारक :- अगर क्रिया के संपादन में कोई वस्तु अलग हो जाये, तो उसे अपादान कारक कहते हैं। इसका विभक्ति चिन्ह "से" है।

जैसे :- पेड़ से पत्ते गिरते हैं। - (पत्ते का अलगाव — पेड़ से)
छात्र कमरे से बाहर गया। - (छात्र का अलगाव - कमरे से)

(6) संबंध कारक :- जिस संज्ञा या सर्वनाम से एक वस्तु से किसी दूसरी वस्तु से संबंध का पता चले उसे संबंध कारक कहते हैं।

चिन्ह - का, के, की, रा, रे, री, ना, ने, नी

संज्ञा	सर्वनाम
जैसे - मोहन का घोड़ा दौड़ता है।	उसका घोड़ा दौड़ता है।
मोहन के घोड़े दौड़ते हैं।	उस के घोड़े दौड़ते हैं।
मोहन की घोड़ी दौड़ती है।	उस की घोड़ी दौड़ती है।

नोट :- यहाँ मोहन (का, के, की) या उस (का, के, की) संबंध कारक है। क्योंकि का घोड़ा, के घोड़े, की घोड़ी का संबंध मोहन या उस से है। यही एक कारक है जिसका संबंध क्रिया से न हो कर वस्तु या व्यक्ति से होता है।

(7) अधिकरण कारक :- जिससे क्रिया के आधार का ज्ञान प्राप्त हो, उसे अधिकरण कारक कहते हैं।

इसके चिन्ह "में" "पर" है।

जैसे - शिक्षक वर्ग में पढ़ा रहे हैं।
महेश छत पर बैठा है।

यहाँ "वर्ग में" और "छत पर" अधिकरण कारक है।

P.T.O.

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

कारक

क्योंकि इनसे पढ़ाने और बोलने की क्रिया के आधार का ज्ञान होता है।

(8) **संबोधन कारक**:- जिस संज्ञा से किसी के पुकारने या संबोधन का बोध हो उसे संबोधन कारक कहते हैं। इसके चिन्ह- हे, अरे, अजी, रे, ओ आदि हैं।

जैसे:- हे ईश्वर, मेरी सहायता करो।
अरे दोस्त, जरा इधर आओ।
यहाँ "हे ईश्वर" और "अरे दोस्त" संबोधन कारक हैं।
कभी-कभी संबोधन कारक नहीं भी होता है, फिर भी उससे संबोधन व्यक्त होता है।

जैसे:-
मोहन, जरा इधर आओ।
भगवान, मुझे बचाओ।
मित्रों, समय आ गया है।

कारकों को संक्षेप में इस प्रकार याद करें:- (कर्त्ता ने), (कर्म को), (करण से), (संप्रदान को, के लिए) (अपादान से), (संबंध का, के, की), (अधिकरण में, पर), (संबोधन हे, अरे आदि)

—x—

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner